ऋग्वेद संहिता

(सरल हिन्दी भावार्थ सहित)

भाग-३

(मण्डल ७-८)

सम्पादक

वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

भगवती देवी शर्मा

Scanned with CamScanner

५८८३. **मा कस्य नो अररुषो धूर्तिः प्रणङ् मर्त्यस्य । इन्द्राग्नी शर्म यच्छतम् ॥८ ॥**

हे इन्द्राग्निदेव ! हम शत्रुरूप मानव से पीड़ित न हों । हमें सुख मिले, हम सुखी हों ॥८ ॥

५८८४. **गोमद्धिरण्यवद्वसु यद्वामश्वावदीमहे । इन्द्राग्नी तद्वनेमहि ॥९ ॥**

हे इन्द्र और अग्निदेव ! हम आपसे जो गौ, अश्व, स्वर्णयुक्त धन माँगते हैं; उसे हम प्राप्त कर सकें ॥९ ॥

५८८५. **यत्सोम आ सुते नर इन्द्राग्नी अजोहवुः । सप्तीवन्ता सपर्यवः ॥१० ॥**

सोमाभिषव होने पर याजक उत्तम अश्वों वाले इन्द्र और अग्निदेव की सेवा की कामना से बार-बार उनका आवाहन करते हैं ॥१० ॥

५८८६. **उक्थेभिर्वृत्रहन्तमा या मन्दाना चिदा गिरा ।आङ्गूषैराविवासतः ॥११ ॥**

वृत्रासुर का हनन करने वाले, आनन्ददायी स्वभाव वाले इन्द्र और अग्निदेव की उत्तम स्तोत्रों द्वारा सम्यक् रूप से हम वन्दना करते हैं ॥११ ॥

५८८७. **ताविद्दुःशंसं मर्त्यं दुर्विद्वांसं रक्षस्विनम् ।**
आभोगं हन्मना हतमुदधिं हन्मना हतम् ॥१२ ॥

वे दोनों (इन्द्र और अग्नि) दुष्टों, दुर्गुणी विद्वानों, राक्षसी स्वभाव वाले अपहरणकर्त्ताओं को घातक शस्त्रों से मारें, उन्हें जल रोक कर रखने वालों (वृत्रादि) की तरह मारें ॥१२ ॥

[सूक्त - ९५]

[**ऋषि** - वसिष्ठ मैत्रावरुणि । **देवता** - सरस्वती, ३ सरस्वान् । **छन्द** - त्रिष्टुप् ।]

सूक्त ९५ तथा ९६ के देवता 'सरस्वती' एवं 'सरस्वान्' हैं । सरस्वती नदी विशेष का भी नाम है तथा दिव्यानुभूति जन्य वाग्धारा को भी सरस्वती कहा गया है । ऋषियों-सिद्धपुरुषों के मुख से, किसी विशिष्ट भाव स्थिति में अनायास ही सरस्वती प्रवाहित हो उठती है । सरस्वती को लक्ष्य करके कहे गये मन्त्र 'सूक्ष्म-प्रवाह' पर एवं (विशेषरूप से सूक्त ९५ के प्रथम तीन मंत्र) नदी सरस्वती पर भी घटित होते हैं । सरस्वान् का अर्थ 'बलवान्' की ही भाँति 'सारस्वत प्रवाहयुक्त' होता है । वायु एवं वाक् प्रवाह विशेष के साथ भी इनकी संगति बैठती है -

५८८८. **प्र क्षोदसा धायसा सस्र एषा सरस्वती धरुणमायसी पूः ।**
प्रबाबधाना रथ्येव याति विश्वा अपो महिना सिन्धुरन्याः ॥१ ॥

यह सरस्वती लोहे के परकोटे की तरह (रक्षा करती हुई) रक्षा करने वाली होकर जल (पोषक-प्रवाहों) के साथ बह रही है । यह (सरस्वती) रथ-वाहक सारथी की तरह अन्य (जल प्रवाहों, शब्द प्रवाहों) को बाधित करती हुई गतिशील है ॥१ ॥

५८८९. **एकाचेतत्सरस्वती नदीनां शुचिर्यती गिरिभ्य आ समुद्रात् ।**
रायश्चेतन्ती भुवनस्य भूरेर्घृतं पयो दुदुहे नाहुषाय ॥२ ॥

पवित्र चेतनायुक्त प्रवाहों में एक यह सरस्वती गिरि (पर्वतों अथवा वाक् स्रोतों) से समुद्र (सागर या अन्तरिक्ष) तक जाती है । (यह) इस लोक के बहुत श्रेष्ठ ऐश्वर्यों को सचेष्ट करती हुई नाहुष (राजा नहुष की प्रजा अथवा सम्बन्ध बनाने वाले व्यक्तियों) को दुग्ध-घृत (पोषक शक्ति वर्धक तत्त्व) देती रही है ॥२ ॥

५८९०. **स वावृधे नर्यो योषणासु वृषा शिशुर्वृषभो यज्ञियासु ।**
स वाजिनं मघवद्भ्यो दधाति वि सातये तन्वं मामृजीत ॥३ ॥

Scanned with CamScanner

६४९९. **मा ते अमाजुरो यथा मूरास इन्द्र सख्ये त्वावतः । नि षदाम सचा सुते ॥१५ ॥**

हे इन्द्रदेव ! हम आपकी मित्रता का लाभ प्राप्त करके अपने गृह में पुत्र-पौत्रों के साथ रहते हुए समृद्धि को प्राप्त करें । सोम का अभिषव करते समय हम एकत्र होकर बैठें ॥१५ ॥

६५००. **मा ते गोदत्र निरराम राधस इन्द्र मा ते गृहामहि ।**
दृळ्हा चिदर्यः प्र मृशाभ्या भर न ते दामान आदभे ॥१६ ॥

हे इन्द्रदेव ! आप गौओं का अनुदान प्रदान करने वाले हैं । हम भी आपकी सम्पत्ति से वंचित न रहें । हमें आपके सिवा और किसी से सम्पत्ति न लेनी पड़े । आप हमें ऐसे ऐश्वर्य से परिपूर्ण करें, जिसे कोई छीन न सके ॥१६॥

[हमें दैवी सम्पत्ति इतनी मिल जाय कि उससे अपने लिए लौकिक सम्पत्ति भी प्राप्त कर सकें, वह सम्पत्ति हमें माँगनी न पड़े । दैवी सम्पत्ति को कोई छीन भी नहीं सकता ।]

६५०१. **इन्द्रो वा घेदियन्मघं सरस्वती वा सुभगा ददिर्वसु । त्वं वा चित्र दाशुषे ॥१७ ॥**

हे राजन् ! आहुति प्रदान करने वाले हम याजकों को इतनी सम्पत्ति क्या इन्द्रदेव ने प्रदान की ? या सम्पत्ति की स्वामिनी सरस्वती (वाणी या मन्त्र शक्ति) ने ? अथवा आपने ही यह प्रदान की है ? ॥१७ ॥

६५०२. **चित्र इद्राजा राजका इदन्यके यके सरस्वतीमनु ।**
पर्जन्यइव ततनद्धि वृष्ट्या सहस्त्रमयुता ददत् ॥१८ ॥

पर्जन्य जिस प्रकार सर्वत्र फैल जाता है, (उसी प्रकार) सरस्वती (नदी या बुद्धि की देवी) के अनुगामी चित्र (नामक या विशिष्ट) राजा (शासक अथवा प्रकाशवान्) ने अन्य राज्याश्रितों को हजारों - लाखों प्रकार के अनुदान प्रदान किए ॥१८ ॥

[बुद्धि के अनुगामी विशिष्ट प्राणों के द्वारा प्राण-प्रक्रिया के सहयोगी अनेकों अवयवों को हजारों-लाखों प्रकार के संचार-संस्कार प्रदान किये जाते हैं । विराट् प्रकृति के संदर्भ में भी यह तथ्य लागू होता है ।]

[सूक्त - २२]

[**ऋषि-** सोभरि काण्व । **देवता** - अश्विनी कुमार । **छन्द** - १-६ प्रगाथ (विषमा बृहती, समासतोबृहती) , ७ बृहती, ८ अनुष्टुप्, ११ ककुप्, १२ मध्येज्योति (त्रिष्टुप्) , ९-१०, १३ - १८ प्रगाथ (विषमा ककुप्, समासतो बृहती) ।]

प्रस्तुत सूक्त के सम्बन्धित देवता द्वारा अपने अनुदान संप्रेषित करने का दिव्य तंत्र ही यहाँ 'रथ' शब्द का अभिप्राय है । स्थूल रथ के साथ मंत्रों के भावों की संगति सटीक नहीं बैठती -

६५०३. **ओ त्यमह्व आ रथमद्या दंसिष्ठमूतये ।**
यमश्विना सुहवा रुद्रवर्तनी आ सूर्यायै तस्थथुः ॥१ ॥

हे अश्विनीकुमारो !आप दर्शनीय रथ पर सूर्या (सूर्य से उत्पन्न उषा अथवा ऊर्जा) का वरण करने के निमित्त आरूढ़ हुए हैं, आपका वह रथ आवाहित करने योग्य है ।हम अपनी रक्षा के लिए आपका आवाहन करते हैं ॥१ ॥

६५०४. **पूर्वापुषं सुहवं पुरुस्पृहं भुज्युं वाजेषु पूर्व्यम् ।**
सचनावन्तं सुमतिभिः सोभरे विद्वेषसमनेहसम् ॥२ ॥

अश्विनीकुमारों का रथ स्तुति करने वालों का पोषक तथा सरलतापूर्वक आवाहनीय है । सबके द्वारा वांछनीय यह रथ सबको पोषण प्रदान करता है तथा समर-भूमि में सबसे आगे रहता है । जिससे शत्रु भी

Scanned with CamScanner